

आतंकवाद—विध्वंसकारी विचारधारा के निदान में संगीत—चिकित्सा की भूमिका

डॉ० ज्योति सिनहा,

पूर्व फेलो,

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, राष्ट्रपति निवास, शिमला (हि.प्र०)

‘आतंकवाद’ यह शब्द हमारे जीवन, मन—मस्तिष्क और जेहन में इस कदर रच—बस गया है कि शायद ही कोई दिन ऐसा होगा जब हम इस शब्द को सुनते नहीं हैं। समाचार पत्र—पत्रिकाओं, टी0वी0, रेडियो सभी से यह शब्द सामान्य रूप से जुड़ गया है। पहले कभी हम हत्या, बमबारी, नरसंहार, विस्फोट इत्यादि शब्दों को सुनते थे तो चिन्तित हो जाते थे। परन्तु आज इन घटनाओं और शब्दों से इतने जुड़ से गये हैं कि इन घटनाओं का प्रभाव स्थायी रूप से हमारे मन—मस्तिष्क पर नहीं होती। हम संवेदनाशून्य से होते जा रहे हैं।

आज विश्व अनेक प्रकार की विषम समस्याओं से घिरा है परन्तु सबसे प्रमुख समस्या जो आज सुरसा की तरह मुँह बाये हमारे समक्ष है वह है— आतंकवाद। इस विश्वव्यापी समस्या को जन्म दिया है कुछ सिरफिरे लोगों ने। इन्हें न अपने देश से प्यार है, न समाज से, न घर से और ना ही स्वयं से। आतंकवाद सबसे पहले अपने परिवार, समाज को प्रभावित करता है फिर इसके साथ कोई कथित विचारधारा जुड़ती है और तब विचार—विस्तार का दायरा व्यापक होता है और देश तथा सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करती है। विश्व व्यापी आतंकवाद का फलक अत्यन्त विस्तृत और व्यापक है।

धन, यश, सत्ता और सम्पत्ति की चाह प्रत्येक इंसान की नैसर्गिक चाह रही है। किसी भी माध्यम से वह इन सभी चीजों को शीघ्र ही पा

लेना चाहता है और फिर इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये जब गलत रास्ते को अपनाकर आसुरी शक्तियों को बढ़ावा दिया जाता है तो ऐसे ही दुष्परिणाम निकलते हैं। पिछले कुछ दशकों से आरम्भ यह मनोवृत्ति आज सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। आम लोगों को आतंकित करने के लिये सामूहिक हत्यायें, लूट—पाट, आगजनी, सरकारी व सार्वजनिक सम्पत्तियों को हानि पहुँचाने जैसे कार्य आज आम हो गये हैं। आज सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद की ज्वाला में झुलस रहा है। भारत आतंकवाद से दशकों से जूझ रहा है। जम्मू—कश्मीर का मामला हो या असम, बिहार या उत्तर प्रदेश का मामला हो, प्रत्येक जगह प्रमुख आतंकी संगठनों ने अपना वर्चस्व बढ़ाया है। अज्ञान—अंधकार से पीड़ित युवकों को आधुनिक शस्त्रास्त्र, स्वचालित रायफल, तथा विस्फोटक पदार्थ आसानी से उपलब्ध हो जा रहा है। जिसके दुरुपयोग से सामान्य जन—जीवन को इसका वीमत्स दुष्परिणाम भुगतान पड़ रहा है आज अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद से जुड़े आतंकवादी पूरे देश के विभिन्न भागों में नित्य नये—नये तरीकों से अपने विध्वंसकारी कारनामों को अंजाम देकर हमारे सुख शान्ति, अमन—चैन को अशांत कर रहे हैं। आतंकवाद से भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व चिन्तित है।

आज इस आतंकवाद से निपटने के लिये सभी को एकजुट होकर मुकाबला करना होगा। आतंकवाद से निपटने की मुहिम में सरकारी व गैर सरकारी सभी अंशों का सहयोग

अपेक्षित होना चाहिये। आतंकवाद और आतंकवादियों पर अंकुश के लिये पुलिस बस और अदालत दोनों को ही सरकार से मदद की दरकार है। पुलिस सुरक्षा बल, न्याय पालिका, जाँच एजेन्सिया, राजनीतिक हस्तक्षेप और गैर सरकारी आतंकविरोधी संगठनों इत्यादि के सहयोग, सुझाव व कार्य-प्रणाली से देश को आतंकवाद की समस्या से कुछ हद तक सुरक्षा अवश्य मिल सकती है।

आज आतंकवाद को नियंत्रित करना आसान नहीं है। देखा जाये तो देश के पास न तो प्रभावी आतंकवाद निरोधक कानून है और न ही चुस्त-दुरुस्त आधुनिक संसाधनों से लैस पुलिस व खुफिया तंत्र। अंग्रेजों के शासन काल में खरीदी गयी थ्री नाट थ्री रायफल आज भी तमाम जिलों में सिपाहियों के कन्धों पर झूलती नजर आती हैं। एक तरफ पुलिस कर्मियों की संख्या कम है तथा दूसरी ओर उनके पास आतंकियों और उनके समर्थकों को समय रहते सख्त सजा सुनाकर उन्हें हतोत्साहित कर सके। आज अनेक आतंकी जेलों में बन्द हैं जिनके मामलों की सुनवाई को अंजाम देने वाले आतंकी को भी न्यायालय से कड़ी सजा नहीं दी गयी और यही कारण है कि आतंकवादियों का दुस्साहस अपने चरम सीमा पर है। दिल्ली, बंगलोर, अहमदाबाद, जयपुर, सूरत, वाराणसी सहित देश के विभिन्न भागों में लगातार होने वाले विस्फोटों ने सम्पूर्ण व्यवस्था पर सवालिया निशान लगा दिया है। केन्द्र व राज्य सरकार के आरोपों-प्रत्यारोपों के मध्य देश का खतरा बढ़ता ही जा रहा है।

राजनीति के माध्यम से आतंकवाद के चुनौतियों का सामना करना मुश्किल है। क्योंकि राजनैतिज्ञों की राजनीति ने इनके मनोबल को काफी मजबूती प्रदान की है। कहीं-कहीं राजनीति भी आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में रोड़ा बन रही है। राजनीतिक दलों की सर्वोच्च प्राथमिकता वोट रह गई है। वो ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना

चाहते जिससे उनके वोट बैंक पर असर हो। आतंकवादियों से तालमेल बनाये रखने वाले ऐसे नेताओं के खिलाफ आवाज उठानी चाहिये। तभी आतंकवाद और आतंकियों के खिलाफ जनता के मन में एकजुटता की भावना विकसित होगी। वोट की राजनीति करने वालों का कोई धर्म, मजहब, जाति नहीं होती। उनके लिये उनके हित से बढ़कर कुछ भी नहीं है। इस रूख को यदि नहीं बदला गया तो सम्पूर्ण राष्ट्र को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में यदि हमें कामयाबी हासिल करनी है तो हमें जाति-धर्म और राजनीति से ऊपर उठकर सोचना होगा। देश से बढ़कर कुछ भी नहीं है। देश की और राष्ट्र की सुरक्षा हमारी प्राथमिक प्राथमिकता और अनिवार्य अनिवार्यता होती है। आवश्यकता है सामुहिक सहचिन्तन, सामंजस्यपूर्ण सहयोगिता तथा दूरगामी राष्ट्रीय हितों व लक्ष्यों के बारे में दूर दृष्टि से सोचने की। एक सुनिश्चित एवं सुनियोजित व्यूह रचना करके उसे संस्थागत और संरचनात्मक रूप देकर सम्पूर्ण विश्व और देश में शान्ति व्यवस्था प्रस्थापित करनी होगी। राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में हमें अपनी ऊर्जा शक्ति का उपयोग बुद्धिमतापूर्वक करनी चाहिये। आतंकवाद से सम्बन्धित कानूनी और अर्धकानूनी संरचनाओं की गतिविधियों के साथ-साथ आतंकवादियों को दण्डित करने की अत्यन्त सुसंगत और त्वरित व्यवस्था स्थापित की जानी चाहिये। आतंकवाद के विरुद्ध व्यवहारिक अन्तर्राष्ट्रीय समझौते करने के लिये प्रयास करना चाहिये। अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था एवं न्याय व्यवस्था में बेहद उत्कृष्ट सामंजस्य होना चाहिये। क्योंकि आतंकवाद से संघर्ष हेतु व्यवस्था में परिवर्तन अति आवश्यक है। आतंकी घटनाओं पर रोक के लिये हमें सूचना तंत्र को विकसित करना होगा। “धमकी, जेहाद के नारों से, हथियारों से हम भारत का मस्तक झुका देंगे.....” ऐसी मंशा रखने वालों को सबक सिखाने की आवश्यकता है। उन्हें यह सीख देने

की आवश्यकता है कि सम्प्रदायिक सद्भाव और भाई-चारे के आगे उन्हें कैसे झुकना पड़ेगा। राष्ट्र की सुरक्षा के लिये इस जंग को हर हाल में जीतना है और यह तभी सम्भव है जब भारत का प्रत्येक व्यक्ति यह सोचे कि वह धरती माता की संतान है, स्वयं भारत है और एक माँ की रक्षा कैसे की जा सकती है यह बात एक पुत्र से बेहतर कोई नहीं समझ सकता है। माँ को बचाना है, स्वयं को सुरक्षित रखना है। ऐसे में जब सुरक्षा की जिम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति ले लेगा तो सम्पूर्ण भारत स्वतः सुरक्षित हो जायेगा।

आज का सन्दर्भ जटिलताओं एवं अन्तर्विरोधों से परिपूर्ण है। अलगाववादी साम्प्रदायिक भावनायें विश्व शान्ति को खण्डित कर देना चाहती हैं। विश्व प्रतिस्पर्धा, एकाधिकार एवं तनाव की दौड़ में हर व्यक्ति उलझा हुआ है। आर्थिक व राजनीतिक वर्चस्व की प्रवृत्तियों के साथ मानवता को विनाश की ओर ले जाने वाले शस्त्रों की होड़ दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। आतंकवादी गतिविधियों द्वारा समूची मानव जाति के विनाश की विभिषिका मंडरा रही है। आज इस कारण विश्व स्तर पर अशान्ति व्याप्त है। इससे जनजीवन बुरी तरह प्रभावित है तथा आतंक एवं दहशत के साये में जीवन जीने को विवश है। ऐसी परिस्थिति में एक असंतुलित व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा है और यह व्यक्तित्व समाज व राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में संलिप्त होता जा रहा है।

वर्तमान समय की वैश्विक स्तर पर जो सबसे बड़ी और भयावह समस्या है वह है—आतंकवाद। एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ एवं जल्दी ही कुछ पा जाने की चाह में मानव मानवता से दूर होता जा रहा है और इस अभाव में वह विभिन्न मानसिक व्याधियों से यथा—तनाव, डिप्रेशन, निराशा, हताशा, अवसाद, चिन्ता से ग्रसित मानव मन आतंकवाद की ओर अग्रसर हो रहा है। आतंकवादी मनुष्य पैदा नहीं होता बल्कि

समाज में मनुष्य आतंकवादी विचारधारा से परींचित एवं आतंकवादी प्रक्रियाओं में निपुण होता है। आतंकवाद एक प्रकार की मानसिक बीमारी है, जिसे संगीत—चिकित्सा के माध्यम से ठीक किया जा सकता है।

कला मानव की चिरसंगीनी है। जैसे—जैसे मानव का विकास हुआ कलाओं का विकास भी होता गया। ललित कलाओं में संगीत कला का स्थान सर्वोपरि है। संगीत मानव जीवन की कलात्मक उपलब्धियों का मूर्तिमान प्रतीक है। यह मन को शान्ति, आनन्द व प्रेरणा प्रदान करती है। संगीत से प्राप्त आनन्द को अलौकिक बताया गया तथा साथ ही जीवन के चार पुरुषार्थों में अंततः मोक्ष प्राप्ति का सरल—सुलभ साधन माना गया।

संगीत में निहित संगीत के दो आधार स्वर एवं लय जो अंततः राग व ताल में परिवर्तित होते हैं, इनका उचित प्रयोग ही चमत्कारिक व चिकित्सकीय प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम है। भारतीय विचारधारा सदा से आदर्श की भावभूमि पर प्रवाहित होती रही है तथा उसका प्रयोजन लोक कल्याण का रहा है। सामवेद से निकला संगीत सदैव से ही मानव व मानव समाज के लिये कल्याणकारी रहा है। वेदों में संगीत को स्वस्थ जवीन शैली का परिचायक बताया गया है। प्राचीन एवं मध्यकालीन अनेक ग्रंथकारों, विद्वानों ने संगीत के चिकित्सकीय प्रभाव का वर्णन किया है। शरीर व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा की है।

संगीत की मधुर ध्वनियों से शारीरिक, मानसिक विकार—विकृतियों का उपचार ही “संगीत—चिकित्सा” है, अर्थात् कला व विज्ञान का समन्वय ही उनेपब जेमतंचल है। गत 50 वर्षों में संगीत—चिकित्सा पर व्यापक शोध हुये हैं और यह साबित हुआ है कि संगीत—चिकित्सा द्वारा रोगियों के पुनर्वास, उपचार के लिये उत्प्रेरणा, भावनात्मक सहयोग एवं भावाभिव्यक्ति में विशेष सहायता

मिलती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में सन् 1950 में षष्ठ्यपवदस षोडशपवद वित्त उनेपब जीमतंचीलष की स्थापना हुयी जिसमें 5000 से ज्यादा लोग जुड़े हैं तथा इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् घायल सैनिकों के स्वास्थ्य लाभ में संगीत का प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद होने के बाद संगीत चिकित्सा को विषय रूप में रखने का विचार हुआ तथा सर्वप्रथम 1944 में मिशिगन के कन्यास विश्वविद्यालय में इस पाठ्यक्रम का आरम्भ किया गया। आज संगीत चिकित्सा को एक सहायक चिकित्सा पद्धति के रूप में अपनाने पर विशेष बल दिया जा रहा है। यद्यपि संगीत-चिकित्सा की नींवभारत में पड़ी जिसका साक्ष्य हमें वेदों से मिलता है परन्तु आज विदेशों में इस विषय पर अधिक शोध-कार्य, अनुसंधान हुये हैं।

विगत दो तीन दशक से भारत में भी इस क्षेत्र में अनुसंधान हो रहे हैं जिसके उत्साहवर्द्धक परिणाम हमारे समक्ष आ रहे हैं।

संगीत आत्मगत, गतिशील व भावनिष्ठ कला है जिसकी अवधारणा मानवीय भावनाओं से सम्बन्धित है। संगीत मानव मन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है तथा पूरे तौर से मनः स्थिति और मनोभावों से सम्बन्धित रहने के कारण मस्तिष्क से पूरी तरह आबद्ध है। शरीर की समस्त क्रियाओं का संचालनकर्ता हमारा मस्तिष्क ही है तथा समस्त मानसिक-शारीरिक व्याधियों का मूल कारण मन से जुड़ा हुआ है अतः मन-मस्तिष्क का स्वस्थ व संतुलित रखना प्रथम आवश्यकता है।

संगीत चिकित्सकों का मानना है कि संगीत श्रवण के समय न्यूरोट्रांसमीटर नामक तरल पदार्थ स्रवित होता है जिससे श्रोता तनावमुक्त हो जाता है। यह अस्थिर एवं विकृत मस्तिष्क को शान्त करता है।

संगीत शरीर में पाये जाने वाले स्टेरॉयड हार्मोन 'कार्टी सोल' को भी कम करता है। तनाव इसी हार्मोन की देन है।

संगीत चिकित्सकों की मान्यता है कि संगीत का प्रभाव मानव मस्तिष्क के सेरिब्रल कार्टेक्स और आटोनॉमिक नर्वस सिस्टम पर सीधे तौर पर पड़ता है। संगीत के स्वर कानों के माध्यम से सीधे सेरिब्रल कार्टेक्स में आते हैं फिर वहाँ से सब-कार्टेक्स क्षेत्र में पहुँचते हैं। यह पूरी प्रक्रिया लिंबिक सिस्टम से नियंत्रित होती है। तथा पूरे शरीर में आटोनॉमिक नर्वस सिस्टम द्वारा प्रसारित कर दी जाती है। इससे संगीत शरीर की साम्यावस्था को नियमित एवं नियंत्रित रखता है। संगीत शरीर के तनाव एवं मांसपेशियों के तनाव दोनों को घटा देता है।

चिकित्सकों के अनुसार संगीत सुनते समय 'इंडोफिन' नामक न्यूरोपेप्टाइड स्राव बढ़ जाता है। इसके बढ़ने से उच्चस्तरीय प्रेरणा के जागरण की सम्भावना बढ़ जाती है। संगीत का मेलेनीन नामक हार्मोन से गहरा रिश्ता है जो प्रकाश उर्जा को ध्वनि उर्जा में रूपान्तरण करता है। अतः संगीत शारीरिक एवं मानसिक विकारों को दूर कर उसे स्वस्थ संजीवनी का रूप प्रदान करता है। संगीत 'मेटाबोलिज्म' को तेज करता है तथा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

अनेक विद्वानों का यह मानना है कि संगीत तनाव दूर करता है और मन को नकारात्मकता से दूर रखता है। संगीत की ध्वनि तरंगें मानव मस्तिष्क में स्थित हाइपोथैलेमस को आन्दोलित करती हैं जिससे वहाँ की ग्रन्थियां सक्रिय हो जाती हैं और स्वास्थ्यवर्द्धक हार्मोन्स का स्राव सुचारु रूप से हो जाता है। इससे रोगी स्वतः सामान्य होने लगता है। साथ ही यह भी मानना है कि संगीत के स्वर शरीर में एक विशेष कम्पन पैदा करते हैं जिससे रक्त संचरण तीव्र हो जाता है। विद्वतजनों का मानना है कि अहिर

भैरव, पूरिया, तोड़ी दबारी कान्हरा तथा राग खमाज मानसिक तनाव को दूर करने में सहायक हैं। राग भैरवी तथा शिवरंजनी मस्तिष्क को शान्ति प्रदान करता है तथा अच्छी निद्रा प्रदान करता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि गीत गाने वाला व्यक्ति तनाव, अवसाद, चिड़चिड़ापन जैसी समस्याओं से जल्दी मुक्ति पा लेता है। कहावत भी है कि—

राग हरे सब रोग को, कायर को दे सूर।

सुखिया को साधन बने, दुखिया को दुःख दूर।।

संगीत मानव जीवन को नैतिक कर्तव्यों की ओर उन्मुख करता है। सामाजिक संघर्षों एवं जीवन की जटिल समस्याओं, चिन्ताओं और अशान्ति को दूर करने में संगीत कला सहायक सिद्ध होती है। प्रत्येक मानव को उत्तम, श्रेष्ठ और सफल बनाने के लिये संगीत सुनना, गाना अनिवार्य है। यह मनोरंजन के साथ-साथ आत्म साक्षात्कार का साधन भी है।

कई जेलों में भी संगीत के माध्यम से जघन्य अपराध में लिप्त कठोर अपराधियों को भी सरल व्यवहार का बनाया गया है। बंद कैदियों को भी समय-समय पर संगीत, प्रवचन, योग इत्यादि के द्वारा सही दिशा में सोचने व कार्य करने के लिये प्रेरित किया जाता है। बिहार सरकार ने रोहतास जिला कैमूर में नक्सलियों के उन्मूलन के लिये नया प्रयोग प्रारम्भ किया है जिसके अन्तर्गत कैमूर वासियों से यह आह्वान किया गया कि वे संगीत-नृत्य में रूचि लें। ढोलक-हारमोनियम जैसे सरल एवं प्रचलित वाद्यों को सीखने की प्रेरणा भी दी। इसके पीछे मूल उद्देश्य यही है कि इससे इनके दिलो दिमाग में जो विष्फोटक एवं विध्वंसकारी विचारधारा अथवा सोच पनप रही है उसका निदान हो तथा समाज में समरसता, साहचर्य एवं सद्भाव बनाये। आतंकवादी व नक्सलधारी विचारधारा से दूर रहने का यह एक सार्थक प्रयास है। इसी समरसता को बनाये रखने के लिये विभिन्न देशों के कलाकारों

द्वारा अपने कला का प्रदर्शन एक-दूसरे देश में किया जाता है। संगीत समस्त जाति, धर्म, वर्ग भेद से ऊपर उठकर है। यह सदैव व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है, तोड़ता नहीं।

भारत संगीत-चिकित्सा विरासत व परम्परा के लिये विश्वविख्यात है। मनोरंजन के साधन के साथ-साथ पूर्वजों ने इसे मानवीय विकास का साधन भी माना और प्रारम्भ से ही इसे सामाजिक चेतना व कला-संस्कृति के वाहक के साथ-साथ चिकित्सा पद्धति के रूप में भी देखा गया। संगीत व्यक्ति के निर्माण में ही नहीं बल्कि परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व के चहुमुखी विकास में भी सहायक सिद्ध हुआ है। मानव के भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास में संगीत कला का उल्लेखनीय योगदान है। संगीत जीवन में आशा और विश्वास का संदेश देता है तथा सार्थक जीवन जीने की दिशा प्रदान करता है। मानवता व प्यार की बोली सिखाता है। यह विश्व बन्धुत्व की आधारशिला प्रेम, दया, सहयोग आदि की भावना को परिपोषित करता है। अतः सार्थक, रचनात्मक एवं ध्येयपूर्ण जीवन जीने के लिये संगीत गुणगुनाना, सुनना व समझना आवश्यक है।

संगीत के अतिरिक्त ऐसा कोई विज्ञान नहीं जो मानव-स्वभाव व व्यवहार को विकसित करे, मनुष्य को व्यवहार कुशल बनाये, नैतिक मूल्यों व संस्कारों को बल प्रदान करे तथा शरीर व निमाग में संतुलन बनाये रखे। अधिकांश चिकित्सक दवाईयों के सथ ही संगीत सुनने की सलाह देते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने तो मानसिक रोगों के लिये संगीत को अचूक औषधि माना है। उनका मानना है कि समस्त रोगों का मूल मन से है अतः मन का खुश रहना जरूरी है। संगीत का सीधा सम्बन्ध मन से होता है अतः रोगों के निवारण में संगीत की भूमिका महत्वपूर्ण है। मस्तिष्क में ऐसे अनेक रासायनिक तत्व होते हैं जो मनुष्य को कार्य करने की प्रेरणा एवं क्षमता

प्रदान करते हैं। इन रासायनिक तत्वों को संगीत द्वारा बढ़ाने का कार्य करके आतंकवाद की समस्याओं से निपटा जा सकता है। संगीत को जीवन का अभिन्न अंग बना लेने से निश्चय ही शरीर व मन दोनों ही स्वस्थ और संतुलित रहेंगे और स्वस्थ समाज की रचना करेंगे।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भोग और योग दोनों ही धरा पर मानव का मन विविध कारणों से प्रदूषित है। मानसिक प्रदूषण ही सामाजिक व राजनैतिक परिसीमाओं को दूषित करती है और फलस्वरूप आतंक और आतंकवादी विविध समस्याओं का जन्म होता है। मानसिक प्रदूषण को नियंत्रित करने तथा किसी भी प्रकार की मानसिक अस्वस्थता का निदान संगीत द्वारा सम्भव है।

सन्तुलित मानसिकता और दैहिक सम्पन्तायुक्त मानव ही शुभ, सुमंगल और शान्ति पथ की ओर समाज, देश और विश्व को अग्रसारित करने में सहयोगी हो सकता है।

संगीत, भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है जिसे प्रकृति ने मानव को उपहार स्वरूप दिया है। आधुनिक मानव समाज जिस तनाव, अशान्ति, भय, आतंकवाद, अभाव एवं अज्ञान का शिकार है उसका समाधान संगीत से सम्भव है। इससे विश्वव्यापी आतंकवादी समस्याओं से निजात पाया जा सकता है।

संगीत सच्चे अर्थों में मानवता को प्रेम, शान्ति और विश्वबन्धुत्व का संदेश प्रदान करता

है। एक मात्र संगीत ही ऐसा माध्यम है जो हृदय के कपट, वासना तथा दानवीय भावना त्यागने का सच्चे अर्थों में उपदेश देता है तथा 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावना को फलीभूत करता है।

सन्दर्भ सूची

1. संगीत चिकित्सा— डा० सतीश वर्मा
2. संगीत चिकित्सा—संपादिका—डा० संगीता श्रीवास्तव
3. अखण्ड ज्योति—2007 जनवरी
4. अखण्ड ज्योति 2005 मई
5. संगीत मासिक पत्रिका—1993
6. निबन्ध संगीत—प्रो० लक्ष्मी नारायण गर्ग
7. शब्द ब्रह्म नादब्रह्म आचार्य श्री राम शर्मा
8. नेशनल सेमिनार पत्रिका—भागलपुर—2009—संगीत चिकित्सा
9. नेशनल सेमिनार पत्रिका—कानपुर संगीत चिकित्सा 2009
10. नेशनल सेमिनार पत्रिका—कानपुर संगीत चिकित्सा 2010

नेट—भाष्कर खाण्डेकर एवं टी०वी० साईरम के लेख।